

Let Your Light So Shine Before Men

दीपक

तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है। भजन संहिता 119:105

लाईटहाऊस

The Lighthouse

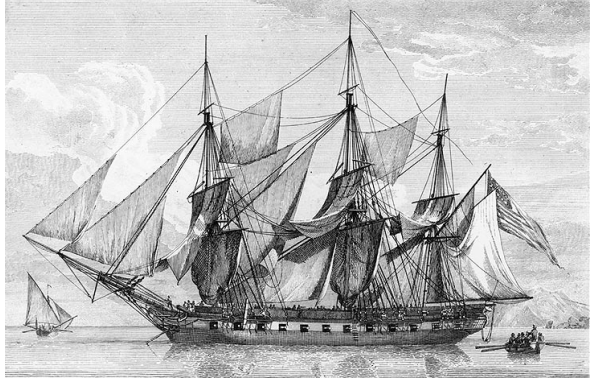
नेवल इन्स्टीट्यूट मैगजीन ने एक बार दो युद्धपोतो के विषय में एक बडी ही रुचिकर कहानी प्रकाशित की, ये युद्धपोत खराब मौसम में समुद्र में थे। कोहरे के कारण ठीक प्रकार से दिखाई नहीं दे रहा था, इसलिए कैप्टन सभी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए ब्रिज पर था।

शीघ्र ही अन्धेरा होने के बाद, पहरा देने वाले कक्ष से सूचना मिली कि, "जहाज के अगले भाग पर रोशनी है।" कैप्टन ने पूछा, "क्या यह रूकी है या पीछे की ओर जा चल रही है?" उत्तर आया कि, "रूकी है", जिसका अर्थ था कि वे उस जहाज के साथ खतरनाक टक्कर होने की दिशा में थे। कैप्टन ने आदेश दिया, "उस जहाज को सिग्नल दो: हम टक्कर होने की दिशा में है, इसलिए अपनी दिशा 20 डिग्री बदल दो।" वापिस सिग्नल मिला, "आपको सलाह दी जाती है कि आप अपनी दिशा 20 डिग्री बदल ले।"

कैप्टन ने कहा, "सन्देश भेजो: मैं कैप्टन हूँ, अपनी दिशा 20 डिग्री बदलो।" उत्तर मिला, "मैं द्वितीय श्रेणी का समुद्री कर्मचारी हूँ, आपके लिए यही अच्छा है कि आप अपनी दिशा 20 डिग्री बदले।" इस बात से कैप्टन को गुस्सा आ गया। उसने गुस्से से आदेश दिया, "मैं एक युद्धपोत हूँ, अपनी दिशा 20

डिग्री बदलो।" उधर से जवाब मिला, "में लाईटहाऊस हूँ।"

प्रभु यीशु मसीह इस जगत की ज्योति है। उन्होंने कहा, "जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पायेगा" हमें अपनी



दिशा को जीवन की ज्योति के अनुसार निदेशित करने की आवश्यकता है।

आज अधिकांश लोग जहाज के इस कैप्टन के समान अपने स्वयं के बनाये मार्ग पर चलना चाहते हैं और वे चाहते हैं कि प्रभु यीशु मसीह उनके जीवन जीने के तरीके के अनुसार अपने आप को बदल लें। लाईटहाऊस की लाईट के समान ही मसीह और उनके मार्ग कभी न बदलने वाले हैं। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक हमें बताता है कि "यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक सा है।"

जो लोग अपनी दिशा बदलने से इन्कार करेंगे और संसारिक प्रकाश के अनुसार चलेंगे, वे क्षतिग्रस्त जहाज के समान नाश होंगे। "क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।"

सुलैमान ने सही कहा, "ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा देख पडता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।"

यदि हम परमेश्वर के राज्य के बन्दरगाह पर सुरक्षित पहुँचना चाहते हैं तो हमें ध्यानपूर्वक अपनी दिशा को निर्धारित करने की आवश्यकता है, क्योंकि यीशु ने कहा, "जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।"

यदि हम अपने महत्व से इतने प्रभावित हैं, और इतने अधिक अहंकारी हैं कि हम नम्र होकर अपने आप को परमेश्वर के हाथ में नही सौंपते हैं, और हमने अपने मार्ग इस प्रकार निर्धारित कर लिये हैं कि हम अपने जीवन की दिशा को नही बदलते हैं, तो हम समुद्र में डूबकर समाप्त हो गये हैं। यशायाह दुष्टों का विवरण इस प्रकार करता है, "परन्तु दुष्ट तो लहराते हुए समुद्र के समान है जो स्थिर नही रह सकता;

और उसका जल मैल और कीच उछालता है।"

पौलुस हमारे विषय में कहता है, "अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है।" हम हमेशा अपने चारों ओर फैले कोहरे या सांसारिक प्रदूषण के कारण आगे आने वाली चीजों को नहीं देख पाते, लेकिन हम इसको भेदकर आने वाली प्रभु यीशु मसीह की रोशनी को देख सकते हैं, यदि हम "विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।"



यशायाह ने हमसे प्रतिज्ञा की कि "जब कभी तुम दाहिनी वा बाई ओर मुड़ने लगे, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा, मार्ग यही है, इसी पर चलो" अपने पीछे आने वाले परमेश्वर के इन शब्दों के साथ और अपने आगे "मार्ग, सच्चाई, और जीवन" के रूप में चलने वाले प्रभु यीशु मसीह के साथ, आओ "हम निशाने की ओर दौड़ चलें, ताकि वह इनाम पाये, जिसके लिए परमेश्वर ने हमें मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।"

'लाईटहाऊस' (The Lighthouse) is taken from 'Minute Meditations' by Robert J. Lloyd

बाईबिल एक विशेष पुस्तक क्यों है?

(a) बाईबिल ही केवल एकमात्र पुस्तक है जो हमें, परमेश्वर के विषय में, प्रभु यीशु मसीह के विषय में और उद्धार के विषय में सच्चा ज्ञान देती है। (इब्रानियों 1:1-2; भजन संहिता 138:2; 2 तीमुथियुस 3:16; भजन संहिता 119:160)

(b) बाईबिल उन लोगों के द्वारा लिखी गयी जो परमेश्वर की पवित्र आत्मा से प्रेरित थे। (2 पत्रस 1:21; 1 पत्रस 1:11; इब्रानियों 1:12)

(c) जो लोग बाईबिल पर विश्वास करते हैं और इसकी शिक्षाओं के अनुसार जीवन बिताते हैं, वे अनन्त जीवन के अधिकारी होंगे, बाईबिल ऐसा वायदा करती है। (यूहन्ना 17:3; रोमियों 2:7; 2 पत्रस 1:11)



दुष्टात्मा और शैतान: पुराना नियम

The Devil and Satan: Old Testament

यहां हम पवित्र शास्त्र में वर्णित दुष्टात्मा (Devil) और शैतान (Satan) से सम्बन्धित पदों को देखेंगे। हम देखेंगे कि ये दोनों एक नहीं हैं, और हम देखेंगे कि नये नियम में प्रयोग किये गये शब्दों को पुराने नियम में अलग तरह से प्रयोग किया।

मुख्य पद: 1 इतिहास 21:1-8

यह घटना दाऊद राजा के अन्तिम समय के लगभग की है। शैतान ने दाऊद को इस्राएल के लोगों की गिनती लेने के लिए उकसाया। इसलिए दाऊद ने इस्राएल के सेनापति योआब को इस्राएल के सभी लोगों की गिनती लेने के लिए कहा। ऐसा करने के कारण परमेश्वर दाऊद से नाराज हो गया। योआब जानता था कि इस्राएल की गिनती लेना गलत था, और उसने कार्य को पूरा नहीं किया।

1. दाऊद ने क्या गलत किया? (भजन 33:16 देखें।)
2. इसी घटना को 2 शमूएल 24:1-10 में पढ़ें। यहां हमें क्या नयी चीज सीखने को मिलती है?
3. क्या आप इन दोनों सन्दर्भों के बीच के अन्तर का वर्णन कर सकते हैं?
4. शैतान कौन था?

शैतान (Satan)

शैतान, इब्रानी (Hebrew) भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ विरोधी है। अंग्रेजी भाषा के पुराने नियम में इसे "adversary" (विरोधी) अनुवादित किया गया है।

कभी-कभी यह विरोधी एक स्वर्गदूत या कोई ईश्वरभक्त व्यक्ति था। उदाहरण के लिए यदि देखें तो:

- गिनती 22:22 में एक स्वर्गदूत को शैतान कहा गया है।
- 1 शमूएल 29:4 में दाऊद को शैतान कहा गया है।

इन दोनों ही उदाहरणों में, अंग्रेजी भाषा की बाइबल में शैतान नहीं लिखा है क्योंकि

इसको अनुवादित कर दिया गया है। 1 इतिहास 21:1 में परमेश्वर को शैतान लिखा गया है क्योंकि परमेश्वर दाऊद का विरोध कर रहा था। यहां अनुवादको ने इस शब्द को बिना अनुवाद किये छोड़ दिया है। यहां दाऊद के लिए परमेश्वर शैतान या विरोधी है क्योंकि परमेश्वर दाऊद की परीक्षा कर रहा था।

अब यदि हम दूसरे पदों में देखें तो वहां कोई ईश्वरभक्त व्यक्ति विरोधी नहीं था। उदाहरण के लिए यदि देखें तो:

- एदोमी हदद और सिरिया का राजा रजोन, सुलैमान के लिए शैतान थे (1 राजा 11:14,23) क्योंकि इन्होंने इस्राएल के विरुद्ध सेनाओं को खड़ा किया।
- भजन 38:20 में दाऊद के शत्रुओं को शैतान कहा गया है।

इन उदाहरणों में फिर से शैतान शब्द को अनुवादित कर दिया गया है।

अय्यूब की पुस्तक के अध्याय 1 व 2 में, शैतान शब्द को अनुवादित नहीं किया गया है। शैतान (विरोधी) परमेश्वर के सम्मुख आता है और यह दावा करता है कि अय्यूब इसलिए धर्मी है क्योंकि उस पर परमेश्वर की आशीष है। वह कहता है कि यदि अय्यूब पर कष्ट आयेगा तो वह धर्मी नहीं रह पायेगा। तब अय्यूब पर विपत्ति आती है और उसकी सम्पूर्ण धन सम्पत्ति नष्ट हो जाती है और उसकी दस सन्तानों की मृत्यु हो जाती है और उसको एक भयंकर त्वचा का रोग लग जाता है। ये सब विपत्तियाँ परमेश्वर के द्वारा ही अय्यूब पर डाली गयीं। इसलिए, यद्यपि शैतान अय्यूब को कष्ट देना चाहता था लेकिन परमेश्वर ने उसकी सलाह पर यह कार्य किया। शैतान में स्वयं इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह यह कर पाता- परमेश्वर ने उसको सामर्थ्य दी। (देखें अय्यूब 2:3; 19:21; 30:21; 42:11; आदि।)

तो इस घटना में कौन अय्यूब का विरोधी है? हम नहीं जानते। शैतान जो भी था उसको यह सन्देह था कि अय्यूब कष्टों में विश्वासी नहीं रह पायेगा। जब शैतान ने अय्यूब के विषय में परमेश्वर से शिकायत की तो, परमेश्वर ने अय्यूब के विश्वास और धार्मिकता को जांचने का निर्णय लिया।

दुष्टात्मा (Devil)

किंग जैम्स वर्जन (King James Version) बाईबल के पुराने नियम में "Devil" शब्द

केवल चार बार आया है (लैव्यव्यवस्था 17:7; व्यवस्थाविवरण 32:17; 2 इतिहास 11:15; भजन 106:37)। उदाहरण के लिए यदि किंग जैम्स वर्जन (King James Version) के लैव्यव्यवस्था 17:7 को देखें तो-

"और वे जो दुष्टात्माओं (Devils) के पूजक होकर व्यभिचार करते हैं, वे फिर अपने बलिपशुओं को उनके लिए बलिदान न करें।"

जबकि दूसरे अनुवाद की बाईबल में इसे अलग तरह से अनुवादित किया गया है- लैव्यव्यवस्था 17:7 को न्यू इण्डियन वर्जन (New Indian Version) में इस तरह से लिखा गया है-

"और वे जो बकरों (Devils) के पूजक होकर व्यभिचार करते हैं, वे फिर अपने बलिपशुओं को उनके लिए बलिदान न करें।"

ये बकरियों के समान रोयेदार मूर्तिया थी। अग्रंजी के रिवाइज्ड स्टैण्डर्ड वर्जन (RSV) में इन्हें 'satyrs' कहा गया है। इनके लिए चाहे कोई भी नाम प्रयोग किया गया हो, ये दुष्टात्मार्ये (Devils) साधारण मूर्तिया थी, जिनकी इस्राएल के आसपास के राष्ट्र पूजा करते थे। इनका नये नियम की दुष्टात्माओं (Devil) से कोई सम्बन्ध नहीं है।



कुछ सम्बन्धित पद

वे पद जिनमें 'शैतान' को अनुवादित किया गया है:

गिनती 22:22; 1 शमूएल 29:4; 2 शमूएल 19:22; 1 राजा 5:4; 11:14,23; भजन 38:20।

वे पद जिनमें 'शैतान' को अनुवादित नहीं किया गया है:

1 इतिहास 21:1; अय्यूब 1 और 2; जकर्याह 3:1-2।

दुष्टात्मार्ये (devils) (KJV):

लैव्यव्यवस्था 17:7; व्यवस्थाविवरण 32:17; 2 इतिहास 11:15; भजन 106:37।

लूसिफर (Lucifer)

जहां शैतान को अनुवादित नहीं किया गया है उसको कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि यह शैतान एक दुष्ट स्वर्गदूत है जिसका नाम लूसिफर है और जिसने आदम के समय में पाप किया। वे कहते हैं कि उसी समय से यह लोगों को पाप करने के लिए परीक्षा में डालता है। यह लूसिफर नाम यशायाह 14:12 (KJV) से आया जहां लिखा है कि "तेरा स्वरूप भोर के तारे (Lucifer) सा था, किन्तु तू आकाश के ऊपर से गिर पड़ा।"

सम्पूर्ण बाईबल में केवल इसी अध्याय में शब्द लूसिफर (Lucifer) लिखा है और बाईबल के नये अनुवादों में यह नहीं मिलता है। यदि आप इसी अध्याय (यशायाह 14) के पद 4 को पढ़ें तो पता चलता है कि यह अध्याय बाबुल के राजा के विषय में है, पद 16 और 17 में भी उसे एक 'व्यक्ति' कहा गया है - कोई गिराया गया स्वर्गदूत नहीं है।

लूसिफर का अर्थ "भोर का तारा" या शुक्र ग्रह (Venus) है जो भोर होने से पहले आकाश में सबसे अधिक चमकता है। वास्तव में आधुनिक अनुवादों में इसे 'भोर का तारा' (morning star) अनुवादित किया गया है। बाबुल का राजा एक बहुत ही अहंकारी और अपने आप को परमेश्वर के तुल्य समझने वाला राजा था। उसने कहा, "मैं सर्वोच्च परमेश्वर सा बनूंगा" (पद 14) वह शुक्र ग्रह (Venus) के समान स्वर्ग में चढ़ने की इच्छा रखता था, न कि वह हराकर पृथ्वी पर गिराया गया।

यहेजकेल पुस्तक अध्याय 28 भी इसी के समान है जो कि सोर के राजा के विषय में है।

सारांश

1. *शैतान* एक इब्रानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ विरोधी है। अधिकांशतः यह इसी प्रकार अनुवादित किया गया है। लेकिन जब यह अनुवादित नहीं किया गया है तो भी इसका अर्थ विरोधी ही है।
2. पुराने नियम में *दुष्टात्मा* (devil) एक मूर्ति है जिसकी इस्राएल के आसपास के राष्ट्र पूजा करते थे।

विचारणीय पद

1. भजन 109 पढ़ें। दाऊद किस विषय में बात करता है?
2. पद 4,6,20 और 29 में शैतान शब्द आया है। इन पदों में इसका क्या अनुवाद है? यहां विरोधी कौन है?
3. इन विरोधियों के विषय में यह भजन क्या बताता है?
4. यह भजन दाऊद की, उसके विरोधियों को दण्ड देने के लिए, परमेश्वर से प्रार्थना है। क्या दाऊद का इस प्रकार की प्रार्थना करना सही था? क्या हमें इस प्रकार की प्रार्थना करनी चाहिये?

अधिक जानकारी के लिए देखें

1. बाईबल शब्दानुक्रमणिका (concordance) का प्रयोग करके, पुराने नियम में आये ऐसे सभी पदों की एक सूची तैयार करें जिनमें इब्रानी शब्द शैतान आया हो। अब देखें कि इन सभी पदों में विरोधी कौन है?
2. हम इस बात का पता कैसे लगा सकते हैं कि यशायाह पुस्तक का अध्याय 14 और यहजेकेल पुस्तक का अध्याय 28 किसी पापी स्वर्गदूत के विषय में नहीं बता रहे हैं?

‘दुष्टात्मा और शैतान: पुराना नियम’ (The Devil and Satan: OT) is from ‘The Way of Life’ by Rob J. Hyndman

कृपया निःशुल्क हिन्दी पुस्तिका

“बाईबल के आधारभूत सिद्धान्तों का परिचय”

और हिन्दी बाईबल पत्राचार पाठ्यक्रम हेतु हमारे निम्न पते पर सम्पर्क करें --

दि क्रिस्टडेलफियन

पो. बा. न. – 10, मुजफ्फरनगर (यूपी) – 251002

ई-मेल – cdelph_mzn@yahoo.in

केवल व्यक्तिगत वितरण हेतु